CLASS-04: Summary

1. सूत्र पाँच - **त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्याव्यन्तरज्योतिष्काः** से हमने जाना व्यन्तर और ज्योतिषी देवों में **त्रायस्त्रिंश** और **लोकपाल** की व्यवस्था नहीं होती है
    - त्रायस्त्रिंश और लोकपालों के न होने से इन देवों की सभाओं की शोभा में कमी आती है
    - यह इनके पुण्य की कमी को दर्शाता है

2. हमने जाना कि अपर्याप्त अवस्था में अशुभ लेश्या होने की अपेक्षा से भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी बराबर हैं
    - लेकिन पर्याप्त दशा में भवनवासी देवों के इन्द्र की व्यवस्था व्यन्तर और ज्योतिषियों की अपेक्षा से अच्छी है
    - क्योंकि उनके त्रायस्त्रिंश और लोकपाल होते हैं

3. देव अच्छे या बुरे अलग-अलग व्यवस्थाओं से होते हैं
4. भवनवासियों में भी त्रायस्त्रिंश और लोकपाल देव की क्या जरूरत है?
    - इस तरह के प्रश्नों का समाधान यही है कि अलग-अलग देवों की व्यवस्था अलग-अलग होती हैं

5. सूत्र छह **पूर्वयोर्द्वीन्द्राः** के अनुसार पूर्व के दो निकाय मतलब भवनवासी और व्यन्तर देवों में दो-दो इन्द्र होते हैं
    - ज्योतिषी देवों में एक ही इंद्र होता है

6. इन्द्रों की संख्या तो भवनवासी और व्यन्तर देवों में अधिक है
    - लेकिन पुण्य या वैभव की अपेक्षा से ~~इनका पुण्य~~ इनकी श्रेष्ठता कम है
    - क्योंकि अब किसी एक इंद्र का सभा पर स्वामित्व नहीं होगा
    - यह उसके ऐश्वर्य में कमी है
    - इसलिए इन्हें अल्प पुण्य वाला कहते हैं
    - जैसे देश का प्रधानमन्त्री भी एक ही होता है
    - दो driver गाड़ी को सही नहीं चला पाएंगे

7. हमने जाना कि अपने-अपने पुण्य और पिछले जन्म के पुरुषार्थ के अनुसार ही तरह तरह के पद मिलते हैं

8. सूत्र सात **कायप्रवीचारा आ ऐशानात्** से हमने जाना कि भवनवासी से लेकर ऐशान स्वर्ग तक के देव
    - मनुष्यों की तरह ही काय से प्रवीचार करते हैं

9. **प्रवीचार** का अर्थ है अपने अन्तरंग में ~~जो~~ वेद के उदय से जो तृष्णा उत्पन्न होती है, उसका प्रतिकार करना
    - वेद के उदय से जीवात्मा में वेदना यानि दुःख उत्पन्न होता है
    - और इस दुःख का प्रतिकार करना ही प्रवीचार है

10. देवों में दो ही वेद होते हैं
    - पुरुषवेद के उदय से स्त्री में रमण करने की इच्छा
    - और स्त्रीवेद के उदय से पुरुष में रमण करने की इच्छा होती है

11. ये इच्छा भी वेद नोकषाय की अनुभाग शक्ति के अनुसार ही तीव्र या मंद होगी
    - जितनी तीव्र या मंद इच्छा उतनी तीव्र या मंद वेदना या दुःख की अनुभूति होगी

12. **प्रतिकार** का अर्थ है जो दुःख उत्पन्न हुआ है उसे दूर करने का उपाय करना
    - जैसे सिर दर्द में vicks लगाना
    - या चोट में lodex